REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

भारतीय जीवन बीमा निगम के क्षेत्र में रोजगार के अवसर का अध्ययन

डॉ.राजू रैदास
शोधार्थी – डी–लिट (वाणिज्य), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा (म0प्र00) भारत.

परिचय – Introduction :-

इंश्योरेंस प्रोफेशनल्स के लिए रोजगार की संभावनाएं दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रहीं हैं. आप एक बीमा अभिकर्ता (इंश्योरेंस एजेंट) के रूप में करियर शुरू कर सकते हैं जहाँ आपको लोगों को बीमा पालिसी बेचनी होती हैं इसके लिए आपको निश्चित टार्गेट दिया जाता है जिसे आपको प्रीमियम के रूप में कम्पनी के लिए कमाकर पूरा करना होता है. इसके बदले में आपको कमीशन दिया जाता है. इसके अलावा सेल्स मैनेजर– इंश्योरेंस का पद भी महत्वपूर्ण होता है जहाँ आपको बीमा अभिकर्ताओं की एक टीम को संभालना होता है। आप इंश्योरेंस अंडरराईटर के रूप में भी अपने करियर की शुरुआत कर सकते हैं।

वर्तमान समय में भारतीय बाजार में विभिन्न प्रकार की सेवाओं के साथ कई बहुराष्ट्रीय और निजी कंपनियां बीमा कारोबार को नया आयाम दे रही हैं। भारत में बीमा क्षेत्र को खुला बनाए जाने से सरकारी एवं निजी बीमा कंपनियों में आकर्षक नौकरियों के अलावा कई संबद्ध अवसर भी इस क्षेत्र में पैदा हुए हैं। यदि आपमें लोगों से संपर्क बनाने के गुर हैं, तो यह करियर विकल्प बेहतर है।

वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के वर्तमान दौर में बीमा क्षेत्र करियर निर्माण हेतु काफी उज्ज्वल क्षेत्र माना जा रहा है। अमरीका तक में जिन पांच प्रमुख करियर विकल्पों का बोलबाला है उसमें बीमा क्षेत्र भी शामिल है। कुछ वर्षों पहले तक भारतीय बीमा क्षेत्र में सरकारी कंपनियों का एकाधिकार था, लेकिन निजी क्षेत्र को बीमा की अनुमति मिलने के बाद एक ओर जहां बाजार में अवसर बढ़े हैं, वहीं दूसरी ओर लोगों को पसंदीदा सेवा चुनने की स्वतंत्रता भी मिल गई है। वर्तमान समय में भारतीय बाजार में विभिन्न प्रकार की सेवाओं के साथ कई बहुराष्ट्रीय और निजी कंपनियां बीमा कारोबार को नया आयाम दे रही हैं। भारत में बीमा क्षेत्र को खुला बनाए जाने से सरकारी एवं निजी बीमा कंपनियों में आकर्षक नौकरियों के अलावा कई संबद्ध अवसर भी इस क्षेत्र में पैदा हुए हैं। यदि आपमें लोगों से संपर्क बनाने के गुर हैं, तो यह करियर विकल्प बेहतर है।

बीमा क्षेत्र का इतिहास :–

जीवन बीमा अपने आधुनिक रूप के साथ 1818 में इंग्लैंड से भारत आया। भारत की पहली जीवन बीमा कंपनी कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) में यूरोपियंस के द्वारा शुरू की गई, जिसका नाम था ओरिएंटल लाइफ इंश्योरेंस। ये कंपनियां भारतीय मूल के लोगों का बीमा नहीं करती थी, लेकिन कुछ समय बाद बाबू मुत्तीलाल सील जैसे महान व्यक्तियों की कोशिशों से विदेशी जीवन बीमा कंपनियों ने भारतीयों का भी बीमाकरण करना शुरू किया। भारत की पहली जीवन बीमा कंपनी की नींव 1870 में मुंबई म्युचुअल लाइफ इंश्योरेंस सोसायटी के नाम से रखी गई।

लोगों को कनविंस कैसे करें :–

यदि आप बात को समझा लेते हैं तो आपके लिए उचित रहेगा। बीमा में करियर बनाने के लिए दो प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है, पहला लोगों को आसानी से मित्र बनाना और दूसरा उनकी परेशानी को सही ढंग से पहचान कर उन्हें बीमा के महत्त्व को समझाना। जिसका भी आप बीमा कर रहे

हैं उन्हें आप समझा सकते हैं कि भविष्य में होने वाली किसी दुर्घटना से बीमा कैसे वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है। इस क्षेत्र में आपका मिलनसार होना जरूरी है।

पदार्पण के लिए है चरणबद्ध प्रक्रिया :–

विद्यार्थी स्नातक के उपरांत इस क्षेत्र में करियर बना सकते हैं। हालांकि कुछ छात्र बारहवीं के बाद से ही बीमा क्षेत्र से जुड़ जाना पसंद करते है। आजकल कई कंपनियां स्नातक छात्रों को पार्ट टाइम जऺब का अऺफर भी देती हैं। फिर भी विषय का पूरा ज्ञान लेने के लिए कालेज के पश्चात बीमा प्रबंधन में मास्टर्स डिग्री लेना श्रेयस्कर रहेगा।

इंश्योरेंस में स्नातकोत्तर कोर्स में सब्जेक्ट होते हैं।
जीवन बीमा और सामान्य बीमा के सिद्धांत एवं प्रयोग।
जीवन बीमा तथा गैर जीवन बीमा क्षेत्र।
बीमा कानून।
लाइफ इंश्योरेंस अंडरराइटिंग और जोखिम प्रबंधन।
बीमा देयता तथा जीवन बीमा क्लेम।
री–इंश्योरेंस तथा लाइफ इंश्योरेंस प्रोडक्ट।

मार्केट की मांग एवं आपूर्ति :–

आजकल इंश्योरेंस प्रोफेशनल्स की बहुत मांग है। आज दुनिया की आबादी में सिर्फ 14 प्रतिशत ही बीमा अभिकर्ताओं के द्वारा बीमित हैं जिसका मतलब है कि अभी भी 86 प्रतिशत लोगों ने किसी प्रकार का कोई भी बीमा नहीं कराया है। अतः आपूर्ति की तुलना में मांग बहुत ज्यादा है। क्योंकि अकसर कहा जाता है कि बीमा प्रार्थना का विषय है। अतः सही पालिसी व एक साफ– सुथरे तंत्र के द्वारा अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है।

बीमा क्षेत्र से कैसे जुड़ें :–

विद्यार्थी स्नातक के उपरांत इस क्षेत्र में करियर बना सकते हैं। वे बीमा प्रबंधन में स्नातकोत्तर कर सकते हैं या फिर एजेंट बनकर भी इस क्षेत्र से जुड़ा जा सकता है। आजकल कई कंपनियां स्नातक छात्रों को पार्ट टाइम जॉब का ऑफर भी देती हैं।

रोजगार के अवसर :–

इंश्योरेंस प्रोफेशनल्स के लिए रोजगार की संभावनाएं दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इसका अंदाजा इन आंकड़ों से ही लगाया जा सकता है कि कुछ साल पहले जहां इक्का–दुक्का कंपनी ही इस क्षेत्र में कार्यरत थीं वहां आज 18 कंपनियां बीमा कर रही हैं। भारत का बीमा बाजार लगभग दो लाख करोड़ का है और यह सलाना 35 से 40 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। कंपनियां भी ज्यादा से ज्यादा पालिसियां बेचने के लिए अब गांवों का रुख कर रही हैं। ऐसे में लगभग सभी कंपनियां ग्रामीण क्षेत्र से एजेंट बनने के लिए आने वाले आवेदनों को प्राथमिकता भी देती हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्र से आया एजेंट अपने क्षेत्र, वहां की भाषा और लोगों के स्वभाव को बहुत अच्छे से समझता है जिससे वह उस क्षेत्र में ज्याद से ज्यादा बीमा करवाकर कंपनी को अच्छी बढ़त दिलाने में सक्षम होता है।

भारत में बीमा क्षेत्र में रोजगार पाने के टिप्स :–

आप बीमा में स्नातक या स्नातकोत्तर डिग्री लेने के पश्चात निम्न सुझावों की सहायता से नौकरी पा सकते हैं :–

- अच्छी कम्पनियों की वेबसाईट को नियमित तौर पर चेक करना तथा जाब ओपनिंग पर उसके लिए एप्लाई करना।
- अपने मित्रों व पहचान वालों का दायरा बढ़ाना जिन्हें आप भविष्य में अपनी इंशोरेंस डील में उपयोग में ला सकें।
- व्यापारिक तौर–तरीके, संवाद एवं सेलिंग स्किल बढ़ाने के लिए किताब पढ़ें।
- वैश्विक बीमा परिदृश्य एवं उन नयी रणनीतियों पर नजर रखें जो अभी देश में नहीं लान्च की गयी हैं।
- इरडा एक्ट जैसे नए कानूनों व नियमों एवं उनमें होने वाले संशोधनों के बारे में जानकारी रखें।
- बड़ी फाइनांस कम्पनियों एवं स्टाक मार्केट पर उनकी स्थिति पर नजर रखें ताकि आप अपने सौदेबाजी व सेलिंग को प्लान कर सकें।

भारत में बीमा क्षेत्र में वेतनमान :–

कंपनी के अनुसार शुरूआत में 10000 से 30000 रुपये तक आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं किसी उच्च पद पर पहुँचने पर आप 1 लाख रुपए का मासिक वेतनमान भी प्राप्त कर सकते हैं यदि आपने किसी प्रसिद्ध बी–स्कूल से एमबीए इन इंश्योरेंस किया है तो आप अपनी प्रथम जॉब में ही ज्यादा बेहतर वेतनमान की अपेक्षा कर सकते हैं एजेंट को मिलने वाला कमीशन ही आपका वेतन होता है। अगर आप ने स्नातक या स्नातकोत्तर किया है तो आपको मिलने वाला वेतन इस बात पर निर्भर करेगा कि वह कंपनी अपने कर्मचारियों को कितना वेतन देती है। अगर आपने किसी प्रसिद्ध बिजनेस स्कूल से एमबीए इन इंश्योरेंस किया है तो आप अपनी प्रथम जॉब में ही ज्यादा बेहतर वेतनमान की अपेक्षा कर सकते हैं।

बीमा एक ऐसी वित्तीय व्यवस्था है, जिसमें कोई भी व्यक्ति एक छोटी–सी राशि के बदले व्यापक आर्थिक सुरक्षा हासिल कर सकता है। बीमा उद्योग आज जीवन, अचल सम्पत्ति, घरेलू साज–सामान, प्राकृतिक आपदा, वाहन, चिकित्सा व्यय आदि कई क्षेत्रों में सेवा उपलब्ध करा रहा है। सेवा का क्षेत्र इतना व्यापक होने के कारण इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी काफी हैं। इसमें आम आदमी के लिए बीमा एजेंट, बीमा सर्वेयर, एक्चुअरीज और विकास अधिकारी आदि के रूप में कार्य करने के अवसर हैं। बीमा एजेंट का काम विभिन्न बीमा प०लिसियों को बेचना होता है। बीमा आवेदनों को स्वीकारने या उनकी समीक्षा करने का जिम्मा 'इंश्योरेंस अंडरराइटर' सम्भालता है। बीमा सर्वेयर का काम नुकसान का आकलन करना होता है। एक्चुअरी का काम बीमा प्रीमियम की दरें तय करना, मृत्यु के कारणों और ट्रेंड की जांच करना तथा उससे सम्बंधित तालिका बनाना होता है। वह अंडरराइटिंग के मानक भी तैयार करता है। विकास अधिकारी को अपने क्षेत्र में बीमा प०लिसियों की बिक्री से जुड़ा सारा काम देखना होता है और इस काम को बढ़ाना होता है। वह बीमा एजेंट की भर्ती और ट्रेनिंग का काम भी देखता है।

किसी भी बीमा कम्पनी में पदों की वरिष्ठता का क्रम कुछ इस प्रकार होता है :–

1. एजेंट
2. एजेंसी सेल्स मैनेजर (यूनिट मैनेजर या डेवलपमेंट ऑफिसर)
3. सेल्स मैनेजरध्एरिया मैनेजर
4. ब्रांच मैनेजर
5. रीजनल मैनेजर
6. कंट्री एजेंसी सेल्स हेड

भारत में बीमा कारोबार के विस्तार की अपार सम्भावनाएं हैं। रोचक तथ्य यह है कि अभी देश में जिन लोगों का बीमा किया जा सकता है, उनमें से सिर्फ 25 फीसदी का ही बीमा हुआ है। अंतरराष्ट्रीय सलाहकार फर्म 'वाटसन वायट्ट' द्वारा तैयार कराई गई एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बीमा कम्पनियों के पास आज ऐसे दक्ष लोगों की भारी कमी है, जो इस काम को कुशलता से अंजाम दे सकें। योग्यता व प्रशिक्षणः शहरी क्षेत्र में बीमा का कार्य करने के लिए सम्बंधित व्यक्ति का बारहवीं और ग्रामीण क्षेत्र के लिए दसवीं पास होना जरूरी है। वैसे, बीमा कम्पनियां अपनी विभिन्न नौकरियों के लिए ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट और इंश्योरेंस में डिप्लोमा धारकों को वरीयता देती है। वह इंश्योरेंस इंस्टीट्यूट अ०फ इंडिया जैसी संस्थाओं के सदस्यों को भी तरजीह देती हैं। यदि कोई बीमा एजेंट किसी बीमा कम्पनी में नियमित कर्मचारी के रूप में कार्य करना चाहता है, तो उसे 'इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलेपमेंट अर्थारिटी (आईआरडीए)' द्वारा दी जाने वाली सौ घंटे की ट्रेनिंग लेनी होगी और इंश्योरेंस में पीजी डिप्लोमा हासिल करना होगा। आईआरडीए के नियमों के मुताबिक हर एजेंट के लिए सौ घंटे का क्लास रूम प्रशिक्षण जरूरी है। इस प्रशिक्षण योजना का पाठ्यक्रम आईआरडीए द्वारा ही तैयार किया गया है। इसमें बीमा के तकनीकी पहलुओं, सम्बद्ध कानूनों और प्रीमियम की गणना की जानकारी दी जाती है। साथ ही, एजेंट को लोगों से डील करने और बीमा पॉलिसी बेचने के गुर सिखाए जाते हैं।

क्या है बीमा :–

बीमा दो पक्षों के बीच की एक सहमति है, जिसमें एक पक्ष होता है बीमा करने वाला और दूसरा पक्ष होता है बीमा करवाने वाला। बीमा कराने वाला व्यक्ति प्रीमियम के रूप में एक निश्चित मासिक अथवा वार्षिक धनराशि बीमा करने वाले के पास जमा कराता है। इसके बदले में बीमा करने वाला उस व्यक्ति को किसी दुर्घटना की स्थिति में प्रीमियम से अधिक राशि अदा करता है। आज एक व्यक्ति से लेकर गाड़ी तक लगभग हर चीज का बीमा होता है। इसलिए अगर आप भी किसी अच्छी जगह नौकरी करना चाहते हैं तो बीमा क्षेत्र एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इस क्षेत्र में अनुभव ही आपकी आमदनी को बढ़ाता है।

बीमा कोर्स करने पर कितना खर्च होगा :–

अगर आप बीमा प्रबंधन कर रहे हैं तो खर्च इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस संस्थान या विश्वविद्यालय से पढ़ाई कर रहे हैं। आमतौर पर इंश्योरेंस पाठ्यक्रम की वार्षिक फीस एक से दो लाख के बीच हो सकती है। एनआईए बिरला इंस्टीट्यूट आदि कुछ बेहतरीन इंश्योरेंस स्कूल हैं। इसके अलावा

कई संस्थान डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से बीमा में पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। जो प्रमुख संस्थान निम्न है :–

- कालेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- एकेडमी ऑफ इंश्योरेंस मैनेजमेंट, दिल्ली
- बिड़ला इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलाजी, दिल्ली।
- इंश्योरेंस इंस्टीच्यूट ऑफ इंडिया, मुंबई।
- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।
- मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल।
- उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर।
- कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, शेख सराय, नई दिल्ली।
- गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।
- रामलाल आनंद कॉलेज (सायंकालीन), दिल्ली विश्वविद्यालय।
- बॉम्बे विश्वविद्यालय।
- एमिटी स्कूल ऑफ इंश्योरेंस एंड एक्चुरिअल साइंस, नोएडा।
- इंस्टी. ऑफ इंश्योरेंस एंड रिस्क मैनेजमेंट, राय यूनिवसिर्टी, दिल्ली।
- सीएमडी स्कूल ऑफ इंश्योरेंस एंड एक्चुरिअल साइंस, मोदी नगर, उ.प्र.।
- नेशनल इंश्योरेंस एकेडमी, बालेवाड़ी, बनेर रोड, पुणे।
- न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, कॉपोर्रेशन ट्रेनिंग कॉलेज, अंधेरी (वेस्ट), मुम्बई।

बीमा क्षेत्र के लिए कौन कौन से गुण होने चाहिए :–

यदि आपमें सेलिंग स्किल, पीपल स्किल हैं तथा आप लोगों की परेशानियों को समझते व उन्हें वित्तीय मदद भी देने को सदैव तैयार रहते हैं तो बीमा क्षेत्र आपके लिए उत्तम है। यदि आप इसे पैसे कमाने का जरिया भर मानते हैं तो इसे करियर के रूप में न चुनें। वास्तविक दुनिया में बीमा का महत्त्व शुरुआत में ही समझा जाना चाहिए। इसके लिए निम्न बातों का रखें ध्यान

- कंपनियों की वेबसाइट को नियमित तौर पर चैक करना तथा जॉब की नोटिस आने पर उसके लिए अप्लाई करना।
- मित्रो और पहचान वालों का दायरा बढ़ाना, जिनके साथ भविष्य में इंश्योरेंस डील कर सकते हैं।
- व्यापारिक तौर–तरीके, संवाद एवं सेलिंग स्किल बढ़ाने के लिए किताब पढ़ें।
- वैश्विक बीमा परिदृश्य एवं उन नई रणनीतियों पर नजर रखें जो अभी देश में नहीं लॉन्च की गई हैं।

जीवन बीमा का महत्त्व :–

- असमय मृत्यु से संरक्षण
- वृद्धावस्था के लिए बचत
- बचत को बढ़ावा मिलता है।
- निवेश की पहल
- साख – जीवन बीमा पo लिसी की जमानत पर ऋण मिल सकता है।
- सामाजिक सुरक्षा

जीवन बीमा पॉलिसियों के प्रकार :–

- आवधिक बीमा पॉलिसी
- आजीवन बीमा पॉलिसी
- सामान्य आजीवन बीमा पॉलिसी
- सीमित भुगतान आजीवन बीमा पॉलिसी
- एकमुस्त प्रिमियम आजीवन बीमा पॉलिसी
- बन्दोबस्ती जीवन बीमा पॉलिसी
- स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ
- संयुक्त बीमा पॉलिसी
- समूह जीवन बीमा पॉलिसी
- लाभ सहित एवं लाभ रहित जीवन बीमा पॉलिसी
- दोहरी दुर्घटना बीमा पॉलिसी

भारत की जीवन बीमा कंपनियों की सूची :–

1. बजाज अलियांज लाईफ इंश्योरेंस
2. बिरला सनलाईफ लाईफ इंश्योरेंस
3. एचडीएफसी स्टैंडर्ड लाईफ इंश्योरेस
4. आईसीआईसीआई प्रुडेंशल लाईफ इंश्योरेंस
5. आईएनजी वैश्य लाईफ इंश्योरेंस कं लिमिटेड
6. भारतीय जीवन बीमा निगम
7. मैक्स न्यूयार्क लाईफ इंश्योरेंस कं लिमिटेड
8. मेट लाईफ इंडिया इंश्योरेंस कं लिमिटेड
9. कोटक महिंद्रा ओल्ड म्यूचल लाईफ इंश्योरेंस लिमिटेड
10. एसबीआई लाईफ इंश्योरेंस कं लिमिटेड
11. टाटा एआईजी लाईफ इंश्योरेंस कं लिमिटेड
12. रिलायंस लाईफ इंश्योरेंस कं लिमिटेड
13. अविवा लाईफ इंश्योरेंस कं इंडिया प्रा. लिमिटेड
14. सहारा इंडिया लाईफ इंश्योरेंस
15. भारती एक्सा लाईफ इंश्योरेंस
16. फ्यूचर जनरालि लाईफ इंश्योरेंस
17. आईडीबीआई फोर्टीज लाईफ इंश्योरेंस

बीमा के प्रकार :–

- जीवन बीमा
- आटो मोबाइल बीमा
- स्वास्थ्य बीमा
- यात्रा बीमा
- गृह बीमा

बीमा की विशेषताएँ एवं प्रकृति :–

1. जोखिम से सुरक्षा – बीमा जोखिमों से का सशक्त उपाय है। जीवन में व्याप्त सभी अनिश्चितताओं से व्यक्ति को चिन्तामुक्त करता है। ये जोखिमें जीवन , स्वास्थ्य, अधिकारों तथा वित्तीय साधनों, सम्पत्तियों से सम्बन्धित हो सकती है। अतः इन सभी जोखिमों से सुरक्षा का एक उपाय बीमा ही है।
2. जोखिमों को फैलाने का तरीका–बीमा में सहकारिता की भावना के आधार पर एक सब के लिए व सब एक के लिए कार्य किया जाता है। समान प्रकार की जोखिमों से घिरे व्यक्तियों को एकत्रित कर एक कोष का निर्माण किया जाता है ताकि एक व्यक्ति की जोखिम समस्त सदस्यों में बँट जाये व किसी एक सदस्य को जोखिम उत्पन्न होने पर उस कोष से उस सदस्य विशेष को भुगतान कर दिया जाता है।
3. जोखिम का बीमितों से बीमाकर्ता को हस्तान्तरण – बीमा में समस्त बीमितों की जोखिमों को बीमाकर्ता को अन्तरण कर दिया जाता है। बीमाकर्ता द्वारा बीमित को हानि होने पर निश्चित भुगतान कर दिया जाता है।
4. बीमा एक प्रक्रिया – बीमा एक प्रक्रिया भी है जो पूर्व निर्धारित विधि से संचालित की जाती है। पहले बीमित अपनी जोखिम का अन्तरण बीमाकर्ता को निश्चित प्रीमियम के बदले करता है तत्पश्चात् बीमा कर्तव्यता द्वारा उस जोखिम के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान की जाती है।
5. बीमा एक अनुबन्ध – बीमा में वैधानिकता का गुण होने से यह एक वैध अनुबन्ध है। इसमें बीमित द्वारा बीमाकर्ता को प्रस्ताव दिया जाता है व बीमाकर्ता द्वारा स्वीकृति दे ने पर निश्चित प्रतिफल (प्रीमियम) के बदले दोनों के मध्य एक वैध अनुबन्ध निर्मित होता है। जिसमें एक निश्चित घटना के घटित होने पर बीमाकर्ता उसकी हानि की पूर्ति करने का वचन दे ता है।
6. बीमा सहकारी तरीका है – बीमा सहकारिता की भावना पर आधारित है। समान प्रकार की जोखिमों से घिरे व्यक्ति एक निश्चित कोष में अंशदान करते है , उसमें से किसी भी सदस्य को जोखिम उत्पन्न होने पर उस कोष से भुगतान कर दिया जाता है। इस प्रकार "सब एक के लिए व एक सब के लिए की भावना पर कार्य किया जाता है।
7. हानियों' जोखिमों को निश्चित करना – बीमा में जोखिमों को समाप्त नहीं किया जा सकता है , परन्तु जोखिमों की अनिश्चितता को कम व निश्चित अवश्य किया जाता है। बीमित द्वारा बीमा कम्पनी को जोखिमों का अन्तरण किया जाता है व एक निश्चित प्रतिफल ६ प्रीमियम से उस जोखिम का मू ल्य निश्चित कर दिया जाता है। अर्थात् निश्चित प्रीमियम के बदले अनिश्चित हानियों को बीमा कम्पनी द्वारा मिलने वाली बीमा राशि के रूप में निर्धारित कर दिया जाता है। यही राशि बीमा दावा राशि कहलाती है।

8. घटना के घटित होने पर ही भुगतान – बीमा में घटना के घटित होने पर ही भुगतान किया जाता है। जीवन बीमा में घटना का घटित होना निश्चित है , जैसे – व्यक्ति की मृत्यु होना , किसी विशेष बीमारी से ग्रसित होना, बीमा अवधि का पूर्ण हो जाना तो ऐसी स्थिति में बीमित को भुगतान होता ही है। परन्तु सामान्य बीमों में घटना के घटित होने पर ही भुगतान होगा अन्यथा बीमित भुगतान हेतु उत्तरदायी नहीं माना जायेगा।
9. जोखिम का मू ल्यांकन व निर्धारण – बीमा में जोखिम का मू ल्यांकन बीमा अनुबन्ध के पूर्व ही कर लिया जाता है। जोखिम की राशि व जोखिम के उत्पन्न होने की सम्भावना के आधार पर प्रीमियम का पूर्व निर्धारण कर लिया जाता है। इस निश्चित प्रतिफल ध प्रीमियम के बदले निश्चित जोखिम उत्पन्न होने पर निश्चित बीमित राशि का भुगतान किया जाता है।
10. भुगतान का आधार – जीवन बीमा में विनियोग तत्व निहित होता है अतः पक्षकार की मृत्यु होने अथवा अवधि पूर्ण होने पर निश्चित राशि का भुगतान बीमित को कर दिया जाता है। परन्तु अन्य बीमा में वास्तविक क्षति के बराबर ही भुगतान किया जायेगा। यह क्षति अनुबन्धानुसार बीमित कारणों से जोखिम उत्पन्न होने पर व बीमित राशि की सीमा में ही भुगतान किया जायेगा उससे अधिक राशि का भुगतान नहीं।
11. व्यापक क्षेत्र – बीमा का क्षेत्र अब बहुत विस्तृत हो गया है। पहले केवल जीवन बीमा, समुद्री बीमा व अग्नि बीमा का ही बीमा होता था पर अब परम्परागत जोखिमों के साथ गैर परम्परागत जोखिमों का भी बीमा किया जाता है। अब विविध बीमा का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। इसमे चोरी बीमा दुर्घटना बीमा, पशुधन बीमा, फसल बीमा आदि अनेक प्रकार बीमों को सम्मिलित किया गया किया गया है।
12. संस्थागत ढांचा – सम्पूर्ण विश्व में बड़ी–बड़ी संस्थाएं बीमा कार्य में लगी हुई है। भारत में जीवन बीमा निगम, सामान्य बीमा निगम एवं उसकी चार सहायक कम्पनियां व कई निजी कम्पनियां बीमा के कार्य में लगी है।
13. बीमा जुआ नहीं है – बीमा में वास्तविक क्षति के बराबर ही क्षतिपूर्ति या सामान्य क्षति होने पर ही क्षति पूर्ति की जाती है , अतः बीमा की तुलना जुए से करना गलत है। जुए में एक पक्षकार लाभ में तो दूसरा पक्षकार हमे शा हानि में ही रहता है परन्तु बीमा में ऐसा नहीं होता है।
14. बीमा दान नहीं , अधिकार है – बीमा में बीमित द्वारा अंशदान दे कर अधिकार प्राप्त किया जाता है अनुबन्धात्मक सम्बन्धों के आधार पर बीमाकर्ता निश्चित प्रतिफल (प्रीमियम) के बदले बीमित को निश्चित समयावधि पश्चात् बीमा धन ध दावा का भुगतान करता है।
15. सामाजिक समस्याओं के निवारण का उपाय – समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक समस्याओं का निवारण बीमा के द्वारा किया जाता है क्योंकि बीमा से समाज की अनिश्चितताओं को निश्चिताओं में व जोखिमों को कम किया जाता है।
16. बीमा कानून अनिवार्य – आधुनिक युग में बीमा का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है इसके साथ ही सरकारों का कर्तव्य होता जा रहा है कि बीमा से सम्बन्धित नियामक अधिनियम बनाये। भारत में भी जीवन बीमा, समुद्री बीमा , साधारण बीमा हेतु अधिनियम बनाये गये हैं। इसके अतिरिक्त बीमा नियन्त्रण एवं विकास प्राधिकरण" द्वारा सम्पूर्ण बीमा व्यवसाय का नियमन एवं नियन्त्रण किया जाता है।
17. बीमा सिद्धान्तों की अनिवार्यता – बीमा अनुबन्ध हेतु कुछ सिद्धान्तों का होना अनिवार्य है। इनमें बीमा योग्य हित, परम सदविश्वास का सिद्धान्त, सहकारिता व संभाविता आदि मुख्य सिद्धान्त है। बीमा योग्य हित के सिद्धान्त के अभाव में बीमा जुए के समान माना जायेगा।
18. वैध सम्पत्तियों ध कार्यों का ही बीमा – बीमा केवल वैध सम्पत्तियों का किया जा सकता है। चोरी, डकै ती तस्करी आदि के सामान का बीमा नही करवाया जा सकता है।
19. बीमितों की बड़ी संख्या का होना – एक ही प्रकार की जोखिम से घिरे व्यक्तियों का जितना बड़ा समूह होगा उतना ही बीमितों को कम प्रीमियम के बदले सुरक्षा प्राप्त होगी।
20. हानि बीमित के नियन्त्रण के बाहर हो – अज्ञात व अनिश्चित हानियों का ही बीमा करवाया जा सकता है। हानि होगी अथवा नहीं होगी, हानि की गहनता व तीव्रता क्या होगी ये सभी नियन्त्रण से बाहर होनी चाहिये

भारतीय जीवन बीमा की आवश्यकता :–

व्यक्तियों का जीवन अनेक प्रकार की अनिश्चितताओं एवं जोखिमों से घिरा हुआ है। उसे कुछ सम्पत्ति से सम्बन्धित जोखिमें है तो कभी जीवन को जोखिम है अतः वह इन जोखिमों के प्रति कै से सुरक्षा प्राप्त करे इसी विचार ने बीमा को एक आवश्यकता बना दिया है। वर्तमान औद्योगिक विकास का आधार ही प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से यदि बीमा को कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। मनुष्य जीवन को तनाव मुक्त करने हेतु बीमा एक महती आवश्यकता बन गया है। निम्न बिन्दुओं के आधार पर बीमा की आवश्यकता का अनुमान लगाया जा सकता है :–

1. जोखिमों के विरूद्ध सुरक्षा प्राप्ति हेतु –सम्पत्तियों का इसलिए बीमा किया जाता है कि उनके नष्ट होने की सम्भावना निरन्तर बनी रहती है या आकस्मिक घटना के घटित होने से अपने अपेक्षित जीवनकाल से पहले ही वे निष्क्रिय हो सकती है।

2. संभावित जोखिमों से सुरक्षा प्राप्ति हेतु –बीमाकृत विषयवस्तु को क्षति हो भी सकती है और नहीं भी, भूकम्प आ भी सकता है, और नहीं भी, भूकम्प आये तो हो सकता है सम्पत्ति को क्षति पहुचे अथवा नहीं। मनुष्य की मौत होना निश्चित है ले किन मृत्यु कब होगी समय अनिश्चित है , अतः इस अनिश्चितता या संभावित जोखिमों से सुरक्षा प्राप्ति हेतु बीमा आवश्यकता बन गया है।
3. जोखिमों के प्रभाव को कम करने हेतु – बीमा बीमाकृत विषयवस्तु को संरक्षण प्रदान नही करता है , खतरे के कारण पहुचाने वाली हानि को भी नही रोकता है खतरे को घटित होने से टाला भी नही जा सकता है। परन्तु कभी–कभी बेहतर सुरक्षातथा क्षतिनियन्त्रक उपायों द्वारा खतरे को टाला या तीव्रता को कम किया जा सकता है जिससे उस विषयवस्तु पर निर्भर व्यक्तियों के जीवन व सम्पत्ति पर खतरे के प्रभाव को कम अवश्य किया जा सकता है।
4. सुरक्षा के लिए अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता से मुक्ति हेतु –बीमा उद्योगपतियों, व्यवसायियों एवं अन्य व्यक्तियों को सुरक्षा के लिए पूंजी वि नियोग से मुक्त कर दे ता है। थोड़ी सी प्रीमियम का भुगतान करके जोखिम को उस सीमा तक सीमित कर लिया जाता है। अतः इस व्यवस्था में लगने वाले धन का अन्यत्र उपयोग किया जा सकता है।
5. वृहत स्तरीय उपक्रमों के विकास हेतु आवश्यक –वृहतस्तरीय उपक्रमों में इतनी अधिक जोखिम होती है कि बीमा के बिना प्रारम्भ करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव भी हो सकता है।
6. वित्तीय संस्थाओं से वित्त प्राप्ति हेतु –वित्तीय संस्थाओं द्वारा भी इन औद्योगिक व व्यावसायिक संस्थाओं को वित्त तभी प्रदान किया जाता है जबकि इनकी सम्पत्तियों का बीमा हो चुका है। अत : भारी मात्रा में वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी बीमा आवश्यक है।
7. विदेशी व्यापार विकास हेतु आवश्यक –निर्यात व्यापार के प्रोत्साहन हेतु भी बीमा आवश्यक है। बीमा माल के मू ल्य की क्षति की दशा में भी पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है व जिससे निर्यातक क्षति की अनिश्चितता से मुक्त होकर निर्यात कर सकते हैं।
8. बचत व निवेश को प्रोत्साहित करने हेतु –जीवन बीमा बचत व विनियोग का अच्छा स्रोत है। जीवन की अनिश्चितताओं को बीमा द्वारा निश्चित करने हेतु अधिक राशि का बी मा कराता है , जिससे अपव्यय कम होकर बचत को प्रोत्साहन मिलता है।

भारत में बीमा प्रकार है :–

यह जरूरी है कि भारत में बीमा–कितने प्रकार के होते हैं :–

1. टर्म बीमा इस प्रकार की बीमा, निश्चित अवधि के लिए होता है।
2. पूरे जीवन का बीमा अगर कोई पूरे जीवन का बीमा लेना चाहता है तो उसे लाइफ कवरेज लेना होगा।
3. एंडोमेंट पॉलिसी
4. मनी बैक प्लान या कैश बैक प्लान
5. बच्चों के लिए पॉलिसी
6. पेंशन प्लान
7. यूलिप

सन्दर्भ गन्थ सूची :–

1. भारतीय जीवन बीमा निगम वार्षिक प्रतिवेदन 2017
2- www.google.com/wikipedia.com
3- www.wikipedia.com
4- www.LIC.co.in
5- "Life Insurance Corporation Ltd. Financial Statements". licindia.in.
6- "LIC IPO: Good news for LIC insurance policy holders! Modi government confirms this big development". Zee Business. 10 February 2021. Retrieved 7 March 2021.